Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

BA PART- I. PAPER- I

प्रत्यक्षीकरण (PERCEPTION)

प्रत्यक्षीकरण एक सक्रिय चयनात्मक एवं संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आंतरिक अंगों तथा वातावरण में उपस्थित वस्तुओं/उद्दीपकों का तत्कालिक अनुभव करता है। प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है , यह मानसिक प्रक्रिया प्राणी में संवेदन की प्रक्रिया से प्रारंभ होती है और उसके द्वारा किसी व्यवहार करने की क्रिया के पहले तक होती रहती है। अतः प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया संवेदन तथा व्यवहार करने की क्रिया के बीच की प्रक्रिया होती है।वातावरण में उपस्थित कोई भी उद्दीपक जब हमारे ग्राह्य अंगों को प्रभावित करता है तो इसकी सूचना हमारे मस्तिष्क को मिलती है, जिस से संवेदन का रूप होता है।हम गत अनुभव के आधार पर उद्दीपक के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं या कोई अर्थ जोड़ते हैं,और इसकी विवेचना करते हैं यानी हम प्रत्यक्षीकरण करते हैं जो तत्कालिक होता है तदोपरांत कोई व्यवहार उत्पन्न होता है।हम उद्दीपक का जब भी प्रत्यक्षीकरण करते हैं तो उसे एक संगठन के रूप में करते हैं ना कि उसके अलग-अलग अंगों के रूप में। जैसे हम एक जानवर को देखते हैं और उसे अपने गत अनुभव के आधार पर हम पता करते हैं कि यह एक गाय है ,कुत्ता है या एक भैंस है।हम जब भी किसी जानवर का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तो उसकी अलग-अलग अंगों के रूप में यथा मुंह, कान, पेट, पूंछ के रूप में अलग - अलग ना करके एक संपूर्ण जीव के रूप में करते हैं।यानी उद्दीपकों का प्रत्यक्षण एक संगठन के रूप में होता है। किसी विशेष परिस्थिति में प्रत्यक्षण संवेदन एवं उत्पन्न व्यवहार के बाद भी होता है जैसे हमें कोई कीट काटता है तो हमारा हाथ तुरंत वहां से उसे हटाता है या मार देता है तदुपरांत हम प्रत्यक्षीकरण करते हैं कि वह कीट मच्छर है या चींटी या कुछ अन्य।

प्रत्यक्षीकरण को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने अपने ढंग से परिभाषित किया है इनमें प्रमुख हैं- एटकिंसन, एटकिंसन तथा हिल गार्ड (1983)के अनुसार- "प्रत्यक्षीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम लोग वातावरण में उपस्थित उद्दिपकों की व्याख्या करते हैं तथा उसे संगठित करते हैं।"

कोलमैन (1977)के शब्दों में-" प्रत्यक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव को अपने आंतरिक अंगों तथा अपने वातावरण के बारे में सूचना मिलती है।"

प्रत्यक्षीकरण की उपरोक्त विवेचना एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर प्रत्यक्षीकरण की निम्नलिखित विशेषताएं पता चलती है--

1) प्रत्यक्षीकरण एक जटिल सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है
2) प्रत्यक्षीकरण एक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है
3) प्रत्यक्षीकरण के लिए उद्दीपक का होना अनिवार्य है
4) प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपक का तत्कालिक अनुभव होता है
5) प्रत्यक्षीकरण में उद्दिपको को संगठित किया जाता है
6) प्रत्यक्षीकरण एक चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया है

स्पष्टत: प्रत्यक्षीकरण एक ऐसी सक्रिय चयनात्मक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें उद्दीपकों द्वारा उत्पन्न संवेदन का हम सिर्फ अर्थ ही नहीं जोड़ते हैं बल्कि अपने पूर्व अनुभूति के संदर्भ में उनकी व्याख्या भी करते हैं उसे कुछ खास-खास नियमों के आधार पर एक संगठित रूप भी देते हैं।

18/07/2020. -Mr. Sanjay Kumar